Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.4, April, 2025

अमेरिका और स्थानीय स्वशासन

दिनेश चन्द्र असिस्टेंट प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग एल0वाई0महाविद्यालय कायमगंज,फर्रूखाबाद

****

शोध सार

ब्रिटेन में स्थानीय शासन की इकाइयाँ अत्यधिक स्वायत्ता का उपभोग करती हैं। यह स्वायत्ता तब भी है, जब कि ब्रिटेन में एकात्मक शासन है जिसमें केन्द्र सरकार सर्वशक्तिशाली है तथा स्थानीय इकाइयाँ मात्र उन्हीं अधिकारों का प्रयोग कर पाती हैं, जो कि उन्हें केन्द्र द्वारा दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त, जो अधिकार क्षेत्र केन्द्र द्वारा स्थानीय इकाइयों को प्रदान किये गये हैं उसमें अधिकांशतः स्थानीय इकाइयाँ जैसा चाहें , वैसा करने के लिये स्वतन्त्र हैं केन्द्रीय नियन्त्रण की आवश्यकता इसलिये पड़ती है ताकि स्थानीय इकाइयों का एक जैसा विकास तथा उनके कार्य में एकरूपता आ सकें। स्थानीय स्वशासन और स्थानीय शासन वैसे तो एक ही हैं लेकिन इनमें कुछ मूलभूत अन्तर भी पाए जाते है जिस कारण ये दोनों एक–दूसरे से पृथक हो जाते हैं। स्थानीय शासन, सरकार को एक अभिकरण मात्र होता है और जिसका नियन्त्रण केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा ही चलाया जाता है जबकि स्थानीय स्वशासन अपने आप में परिपूर्ण होता है और इस पर किसी का कोई सीधा नियन्त्रण नहीं होता है। उदाहरण के लिए भारत में स्थानीय शासन वह है। जिसका मुखिया जिलाधिकारी होता हैं। इसके विपरीत स्थानीय स्वशासन के अन्तर्गत ग्राम पंचायतें नगर पालिकाएँ और जिला पंचायतें जैसी संस्थाएं आती हैं। स्थानीय शासन अपनी नीतियां स्वयं निर्धारित नहीं करता अपितु वह शासन (सरकार) द्वारा निर्धारित नीतियों को ही लागू करने का काम करता है। इसके विपरीत स्थानीय स्वशासन की संस्थाएं ही नीतियां बनाती हैं और उनको लागू भी करवाती हैं। स्थानीय शासन का कामकाज करने वाले लोग शासन द्वारा नियुक्त किये जाते हैं जबकि स्थानीय स्वशासन का कार्यरत व्यक्ति जनता द्वारा निर्वाचित किये जाते है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय स्वशासन लोकतन्त्र के अधिक निकट है। स्थानीय शासन को किसी प्रकार की स्वायत्ता हासिल नहीं होती है जबकि स्थानीय स्वशासन पूरी से स्वायत्व होता है। स्थानीय शासन में भ्रष्टाचार और लालफीताशाही होती है जबकि स्थानीय स्वशासन में ऐसा नहीं होता है।

बीज शब्दः *पंचायतीराज, व्यवस्था, स्थानीय स्वशासन ,नियन्त्रण केन्द्र ,उपनिवेश*

****

विश्व शक्ति अमेरिका एक समय में ब्रिटेन का ही उपनिवेश था इसलिए अमेरिका के आधुनिक स्थानीय स्वशासन पर भी ब्रिटेन का प्रभाव स्पष्ट देखने को मिलता है। इसका कारण यह है कि अमेरिका के प्रारम्भिक निवासी, ग्रेट ब्रिटेन से ही आए थे और वे अपने साथ

ब्रिटेन की परम्पराओं को भी साथ में लाए थे। अमेरिका में कुल 50 राज्य हैं और वहॉ का संविधान संघात्मक व्यवस्था की स्थापना करता है। इस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका में संघीय सरकार है जबकि राज्यों में अपनी अपनी सरकारें है। अमेरिका में एक संविधान संशोधन द्वारा स्थानीय स्वशासन को संवैधानिक जामा पहनाया गया था। वहॉ स्थानीय स्वशासन संस्थाऍ प्रांतीय सरकार निचले पायदान पर होती है और इस प्रकार वे सरकार का तीसरा स्तर बनाती हैं। वैसे अमेरिका में स्थानीय स्वशासन की जड़े काफी गहरी और पुरानी है। पूर्व में वहां स्वैच्छिक अग्निशमन विभाग, जल, जनपद, शहरी सरकार और टाउन बैठकें जैसी संस्थाएं अस्तित्व में रह चुकी हैं। अमेरिका में स्थानीय स्वशासन की संस्थाएं राज्य सरकारों द्वारा स्थापित की जाती है और अमेरिका संघ के विभिन्न राज्य अपने–अपने तरीके से इन संस्थाओं को गठन करते हैं। एक अनुमान के अनुसार समूचे अमेरिका में 80 हजार से भी अधिक स्थानीय स्वशासन संस्थाएं अस्तित्व में हैं।

अमेरिका में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं का गठन राज्य सरकारों द्वारा होते हुए भी सभी राज्यों की इन संस्थाओं में कुछ समानताऍ देखने को मिलती हैं अर्द्ध नगर महापालिका और नगर महापालिका। अमेरिका में कुल 50 राज्यों में से कुल 48 राज्यों में काउन्टीज है। इनके अलावा सभी राज्यों में विशेष जनपद भी हैं। राज्यों में अर्द्ध नगर महापालिकाओं का गठन राज्य सरकार द्वारा अथवा काउन्टी द्वारा किया जाता है। इनके गठन में स्थानीय जनता की कोई भूमिका नहीं होती है। इसके विपरीत नगर महापालिकाओं का गठन आम जनता द्वारा निर्वाचन के जरिए किया जाता है।

जिस प्रकार हमारे यहॉ स्थानीय महत्व की समस्याएं ग्राम पंचायतों और नगर पालिकाओं द्वारा सुलझायी जाती है ठीक उसी प्रकार अमेरिका में भी जन सुविधाएं उपलब्ध कराने का काम अर्द्ध महानगर पालिकाएं और महानगर पालिकएं ही करती हैं अमेरिका में स्थानीय स्वशासन संस्थाएं पुलिस जैसी कुछ–प्रमुख सेवाओं का भी संचालन और नियंन्त्रण करती है। वहॉ यें संस्थाएं जनता को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने का काम तो करती ही है साथ ही ये राज्य सरकार की एजेंट के रूप में भी काम करती हैं। कुछ ऐसे कार्य होते हैं जो राज्य सरकार की जिम्मेदारी होते हैं। ऐसे कार्यों को भी अमेरिका में स्थानीय स्वशासन संस्थाएं, राज्य सरकार के एजेंट के रूप में संचालित करती हैं।

हालांकि अमेरिका में भी स्थानीय निकाय संस्थाओं का गठन जनता द्वारा निर्वाचन पद्धति से किया जाता हैं लेकिन फिर भी ये संस्थाएँ राज्य सरकार के नियन्त्रण में काम करती हैं। लेकिन हमारे यहॉ ऐसा नहीं है। इस प्रकार भारत में स्थानीय स्वशासन संस्थाएं अधिक स्वतन्त्र और अधिक लोकतान्त्रिक होती है। यदि जरूरत पड़े तो अमेरिका में राज्य सरकार, स्थानीय निकाय के क्षेत्र में हस्तक्षेप कर नियम कायदे भी बना सकती है। अब बात आती है अमेरिका में स्थानीय स्वशासन के इतिहास की। किसी समय में अमेरिका ब्रिटेन का एक औपनिवेश था इसलिए अमेरिका के प्रशासनिक तन्त्र पर ब्रिटिश छाप आज भी देखी जा सकती है। जब अमेरिका ब्रिटेन का उपनिवेश था उस समय अमेरिका के तत्कालीन गवर्नर ने ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में एक चार्टर जारी करके लगभग दो दर्जन अमेरिकी नगरों को बरो का दर्जा दिया था। इन बरों में स्थानीय स्वशासन के लिए बरो–परिषदें भी बनायी गयीं लेकिन कुछ कतिपय कारणों से ये परिषदें ठीक ढंग से अपना काम नहीं कर सकीं इसलिए चार्टर वापस ले लिया गया। बरो परिषदों के सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित किये जाते ये तथा इनकी कमान मेयर सम्हालते थे और उसकी सहायता के लिए सभासद भी होते थे। बरों परिषद में कुछ एल्डरमैन भी होते थें।

ब्रिटेन की दासता से मुक्त होकर सन् 1789 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का गठन किया गया जिसमें कुल 50 राज्य सम्मिलित किए गए थे। नए माहौल में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के लिए सभी प्रकार के विधि विधान राज्य विधानमंडल द्वारा बनाए जाते थे। इस समय अमेरिकी राज्य न्यू इग्लैंड में होम रूल अर्थात स्वयं का राज था। इस व्यवस्था के तहत न्यू इग्लैंड के शहरों में नियमित समयान्तराल में आम नागरिकों की बैठकों में नगर के लिए नीतियों और कार्यक्रमों का निर्धारण किया जाता था। इस बैठक में एक परिषद का भी गठन किया जाता था जो शहर की सुविधाओं का ख्याल रखती थी।

स्वतन्त्रता के बाद अमेरिका के स्थानीय स्वशासन में ब्रिटिश प्रभाव क्षीण होने लगा। अमेरिकी शहरों में मेयर का चुनाव भी जनता द्वारा सीधे ही किया जाने लगा। और इसी के साथ लोगों को मत देने का अधिकार था जिनके पास कुछ सम्पत्ति थी उन्हीं लोगों को मत देने का अधिकार था। लेकिन बाद में सम्पत्तिविहीन सभी गोरे लोगों को मताधिकार दे दिया गया। स्वतन्त्रता पश्चात अमेरिकी निर्वाचन व्यवस्था में लग्बे समय तक पद बना रहता था। इस प्रवृत्ति

को समाप्त करने के लिए स्थानीय स्वशासन के विभिन्न पदों के लिए चक्रानुक्रम के सिद्धान्त को लागू किया गया।

उन्नीसवीं सदी के आते आते अमेरिकी स्थानीय स्वशासन संस्थाओं से ब्रिटिश प्रभाव लगभग पूरी तरह से समाप्त हो गया था। इसके बाद ही अमेरिका में गृहयुद्ध छिड़ गया। जिसका सबसे अधिक नुकसान स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को उठाना पड़ा। इस दौरान तेजी से औद्योगीकरण हुआ फलस्वरूप गांवो से शहरों की ओर अत्यधिक तेजी से लोग प्रवसन करने लगे। इस स्थिति के कारण एक बार फिर लोगों को झुकाव स्थानीय स्वशासन की ओर होने लगा और सरकार भी स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को अधिक से अधिक देने लगी ताकि अधिकाधिक लोगों की नागरिक सुविधाएं उपलब्ध करायी जा सकें।

अब बात अमेरिका में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं की वर्तमान संरचना की। संयुक्त राज्य अमेरिका एक संघ राज्य है जिसमें कुल 50 राज्यों को मिलाकर एक संघ का गठन किया गया है। संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डी0सी0 में स्थित हैं। एक जानकारी के मुताबिक समूचे संयुक्त राज्य अमेरिका में कुल 86,692 स्थानीय सरकारें अस्तित्व में हैं।

प्रत्येक अमेरिकी राज्य में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं का गठन और संरचना अलग अलग प्रकार की है क्योंकि इनका गठन राज्यों के विधानमंडलों द्वारा किया जाता है। अमेरिका में स्थानीय सरकारों के दो रूप हैं– समान ध्येय वाली स्थानीय सरकारें और विशिष्ट ध्येय वाली सरकारें।

काउन्टीज को समान ध्येय वाली सरकार कहा जाता है और प्रत्येक काउन्टी के अन्तर्गत नगर, ग्राम, नगर क्षेत्र और कस्बे आते हैं। काउन्टीज की ये विभिन्न इकाइयॉ उन सभी कार्यों को सम्पादित करती है जिनको सम्पादित करने का अधिकार राज्य सरकार द्वारा उन्हें दिया गया होता है।

समान ध्येय वाली स्थानीय सरकारों और विशिष्ट ध्येय वाली स्थानीय सरकारों में मुख्य अन्तर यह है कि एक ओर जहॉ समान ध्येय वाली स्थानीय सरकारें जहॉ समान्य कार्य करती है वहीं विशिष्ट ध्येय वाली स्थानीय सरकारें वही विशिष्ट कार्य करती है जिनकों करने का निर्देश उन्हें राज्य सरकार द्वारा प्राप्त होता है। उद्भव और विकास के आधार पर भी अमेरिका में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को दो भागों में बॉटा जा सकता है। पहले वर्ग में अर्द्ध नगर महापालिकाएँ तथा दूसरे वर्ग में नगर महापालिकाएँ आती है। काउन्टी नगर, नगर

क्षेत्र और विशिष्ट ध्येय जनपद अर्द्ध नगर माहपलिकाओं के अन्तर्गत आते है जिनकी स्थापना राज्य सरकार अथवा राज्य सरकार के एजेण्ट के रूप में काउन्टी द्वारा की जाती है। जबकि नगर महापालिकाओं के अधिकतर क्षेत्र नगर और गॉव आते हैं और नगर महापालिका का गठन वहॉ की आम जनता द्वारा निर्वाचन के द्वारा किया जाता है। इस प्रकार वैधानिक रूप से वो स्थानीय स्वशासन के इन दो रूपों में अंतर पाया जाता है लेकिन व्यावहारिक रूप से ये दोनों समान ही हैं।

नगर का मुख्य प्रशासक क्लर्क होता है वह बैठक का संचालन व महत्वपूर्ण दस्तावेजों का प्रबंधन करता है। यह भारतीय महानगरों के पुलिस कमिश्नर के समकक्ष होता है। शहर में विधि और व्यवस्था का उत्तरदायित्व इसी का होता है। अमेरिका में अधिकतर नगर क्षेत्र समकोणीय आकार के होते हैं। निम्नलिखित राज्यों में समकोणीय नगर क्षेत्र बहुतायत से पाए जाते हैः–

- ☆ मशीगन
- ☆ इंडियाना
- ☆ पिन्सवेलिया
- ☆ नार्थ डकोटा
- ☆ कसास
- ☆ इल्लिोयस
- ☆ ओहायो
- ☆ मिनीसोटा

नगर क्षेत्रों का प्रशासन एक निर्वाचित बोर्ड संभालता है। अमेरिका के विभिन्न राज्यों में इन नगर क्षेत्रों का सुपरवाइर्स बोर्ड, टाउनशिप बोर्ड, ट्रस्टीज बोर्ड अथवा आडीटर्स बोर्ड आदि अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है।

अमेरिका के कुछ शहरों में मेयर योजना भी लागू है। मेयर शहर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में कार्य करता है और उसे परिषद द्वारा पारित प्रस्तावों पर वीटो का अधिकार प्राप्त होता है। मेयर को विधायी, कार्यपालिका वित्तीय और न्यायिक चारों प्रकार के अधिकार मिले होते हैं। मेयर वार्षिक बजट भी तैयार कराता है।

अमेरिका में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को काफी अधिक वित्तीय संसाधन प्राप्त हैं। अधिकतर संस्थाएं अपने स्वयं के स्रोतों से भी काफी आय अर्जित कर लेती हैं। यह आय विभिन्न प्रकार के करों व शुल्कों से प्राप्त करती है। इसके अलावा राज्य व संघ सरकार द्वारा भी स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को समय समय पर आर्थिक सहायता उपलब्ध करायी जा सके। स्थानीय स्वशासन संस्थाएं नागरिकों को जो सुविधाएं उपलब्ध कराती है उनके एवज में उपभोक्ता शुल्क भी वसूल करती हैं। लेकिन शिक्षा, अग्निशमन और पुलिस जैसी सेवाएं सभी प्रकार के करों से मुक्त हैं।

जिस प्रकार भारत में पंचायती राज संस्थाओं को राज्य केन्द्र सरकार वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती हैं उसी प्रकार अमेरिका में भी सरकारें समय समय पर वित्तीय सहायता देती रहती हैं। वहॉ यह सहायता दो प्रकार की होती है– कार्यात्मक अनुदान और एकमुश्त अनुदान। कार्यात्मक अनुदान किसी कार्य विशेष के लिए दिया जाता और अनुदान प्राप्त करने वाली संस्था को हर हालत में वह कार्य सम्पादित करना पड़ता है जिसके लिए अनुदान दिया गया हो। सामान्य प्रकार के अनुदान को एक मुश्त अनुदान कहा जाता है। इसके अलावा स्थानीय स्वशासन संस्थाएं आवश्यकता पड़ने पर कर प्रत्यशा ऋण, धारा ऋण, सामान्य इकरार बॉड्स और राजस्व बॉन्डस और राजस्व बॉन्डस आदि से भी राजस्व जुटाती हैं। हमारे देश की भॉति अमेरिका में भी स्थानीय स्वशासन इकाइयों पर सरकार का स्पष्ट नियन्त्रण होता है। सबसे बड़ा नियन्त्रण संवैधानिक नियन्त्रण होता है जो राज्य के संविधान द्वारा उन पर रोपित किया जाता है।

सभी स्थानीय स्वशासन इकाइयों पर विधायी नियन्त्रण भी होता है। राज्य विधानमण्डल की समय समय पर अधिनियम पारित कर यह निर्देशित करते है कि ये संस्थाऍ किस प्रकार कौन कौन से कार्य करेंगी। इन संस्थाओं की संरचना, गठन और कार्य करने के तरीके का निर्धारण भी राज्य के विधानमण्डल द्वारा ही किया जाता है। इसके अलावा स्थानीय स्वशासन इकाइयों पर कार्यपालिका का भी नियन्त्रण होता है। राज्य सरकार के अधिकारी देखते है कि ये संस्थाएं अपनी जिम्मेदारी ठीक प्रकार से निभा रही है अथवा नहीं। वर्तमान में स्थानीय स्वशासन इकाइयों पर संघीय सरकार का प्रभाव और नियन्त्रण लगातार बढ़ता जा रहा हैं। अमेरिका में स्थानीय स्वशासन पर एक नजर डालने के बाद अब हम ब्रिटेन के स्थानीय स्वशासन पर नजर डालेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अब्बासायुल, वाय, बी; ए सोशियोजोजिकल स्टडी ऑफ शिड्युल्ड कास्ट लेजिसलेटर्सा ऑफ आन्ध्र प्रदेश, एम.लिट्. थीसीस, उस्मानिया यूनिवर्सिटी, 1974।

अब्बासायुलु, वाय.बी; शिड्युल्ड कास्ट इलिटः ए स्टडी ऑफ इलिट इन आंध्र प्रदेश, प्रगति हैदाराबाद, 1978।

अग्रवाल, पी.सी. एवं अशरफ, एम.एस; इक्वालिटी प्रिविलेज : ए स्टडी ऑफ स्पेशल प्रिविलेजेस ऑफ शिड्युल कास्ट इन हरियाणा, श्री राम सेंटर फॉर इण्डस्ट्रीज रिलेशंस एण्ड ह्यूमन रिसार्सेज; नई दिल्ली, 1977।

आप्टे, प्रभा, भारतीय समाज में नारी, क्लासिक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 1996।

बीजू, एम.आर.; डायनामिक्स ऑफ न्यू पंचायत राज सिस्टम, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1997।

भदौरिया, बी.पी.एस; एवं दुबे, बी.के.; पंचायत राज एण्ड रूरल डैबलपमेंट, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1989।

भार्गव बी.एस.; पंचयात राज सिस्टम एण्ड पॉलिटिकल पार्टीज, आशीष पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 1979।

भट्ट, जी.डी; इमर्जिग लीडरशिप पैटर्न इन रूरल इण्डिया, एम.डी. पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1994।

भट्ट, जयश्री, समाज कल्याण : नारी दीक्षा संस्कृति, आदित्य पब्लिशर्स, बीना (म. प्र)1998।

चक्रवर्ती, के.एवं. भटटाचार्य, एस.के.; लीडशिप फैक्शंस एण्ड पंचायत राज, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, 1993।

Corresponding Author: Dinesh Chandra
E-mail: dineshchandra715@gmail.com
Received: 05 March, 2025; Accepted: 22 March, 2025. Available online: 30 March, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License